बाइबल टीचर

वर्ष 20 | मार्च 2023 | अंक 4

सम्पादकीय

कलीसिया में अनुशासन

कलीसिया चुने हुए लोगों की मण्डली है। यह लोग संसार में बुलाए गए तथा उद्धार पाए हुए लोग हैं। एक महत्वपूर्ण बात जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए वो यह है कि कलीसिया के लोग विभिन्न वर्गों से आये हैं, और सबका व्यावहार भिन्न होता है। कई बार कुछ सदस्य ऐसे होते हैं जिनका व्यावहार उचित नहीं होता तथा कुछ ऐसे भी हैं जो अनुशासन से बाहर चले जाते हैं। परन्तु हमें यह जानने की आवश्यकता है कि अनुशासन की जरूरत हमारे परिवार में स्कूलों में तथा हर संस्था में पड़ती है। जहां अनुशासन नहीं होता वहां संस्थान सुचारू रूप से नहीं चलते।

कलीसिया में अनुशासन का अर्थ है प्रत्येक सदस्य को अपने आप को सही रखना है। अपने जीवन को साफ़ सुथरा रखना है। कई बार कई सदस्य अपने जीवन को साफ़ सुथरा और अनुशासन में नहीं रखते और इसलिये उनके विरूद्ध कलीसिया को कार्यवाही करनी चाहिये क्योंकि पौलूस ने कहा था कलीसिया में सारी बातें सभ्यता अनुसार उचित रीति से और क्रमानुसार की जाएं। (1 कुरि. 14:40)। आपके उद्धार का कारण आपके आत्मिक अनुशासन से जुड़ा हुआ है। कलीसिया के साथ ईमानदारी से जुड़े रहना बहुत आवश्यक है। यीशु से हम सीखते हैं कि उसने भी अपने जीवन को अनुशासन में रखा और यही बात वह अपने अनुयायियों को भी सिखाना चाहता है।

एक आम बात जो अक्सर देखने को मिलती है कि कई लोग शुरू में बड़े खुश होकर यीशु के पास आते हैं परन्तु कुछ ही समय पश्चात वापस चले जाते हैं यानि यीशु के प्रति जो उनका पहिला प्रेम था उसे वे छोड़ देते हैं। कई लोग कलीसिया में अनुचित चाल चलते हैं जिसके कारण कलीसिया के विषय में लोग बुरी बातें बोलते हैं। जब हम अनुचित चाल चलते हैं तथा अपने जीवनों में प्रभु को प्रथम स्थान नहीं देते तब हमारे जीवन कलीसिया के प्रति अनुशासित नहीं है।

कई लोग अपने अनुचित कार्यों द्वारा कलीसिया का माहौल बिगाड़ देते हैं। ऐसा भी देखा

जाता है कि कई लोग मसीही बनने के बाद अपनी पुरानी ज़िन्दगी को नहीं छोड़ते। वे गाली गलोच, नशा करना तथा झगड़ा करना जैसी गलत बातों को नहीं छोड़ते। हमें अपने विश्वास की चौकसी करनी चाहिये। जो लोग गलत हैं उन्हें अनुशासन सीखना आवश्यक है। हम अपने परिवार में अपने बच्चों को अनुशासन सिखाते हैं। नितिवचन 13:24 में बुद्धिमान प्रचारक ने लिखा है, ''जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उससे प्रेम रखता है वह यत्न से उसे शिक्षा देता है। प्रेरित पौलूस ने कोरिन्थ की कलीसिया में अनुशासन के विषय में इस प्रकार से कहा था, ''यहां तक सुनने में आता है कि तुम में व्यभिचार होता है, वरन ऐसा होता है, कि जो अन्य जातियों में भी नहीं होता, कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है। और तुम शोक तो नहीं करते, जिससे ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड करते हो। पौलूस यहां कहना चाहता है कि जब कलीसिया में कोई पाप या बुराई दिखाई देती है तो तुम चुप रहते हो जबकि ऐसे व्यक्ति के विरूद्ध कार्यवाही करनी चाहिये। पौलूस ने कहा था कि यदि कोई भाई कहलाकर व्यभिचारी या लोभी या मुर्तिपूजक या गाली देनेवाला या पियक्कड़ या अंधेर करनेवाला हो तो उसकी संगति मत करना बरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना, क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतरवालों का न्याय नहीं करतें? परन्तु बाहर वालों का न्याय परमेश्वर करता है, इसलिये उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो।'' (1 कुरि. 5:1-13)। यहां प्रेरित उस कलीसिया के सदस्य की बात कर रहा है जो अनुचित चाल चल रहा है। कोई भी संस्था बिना नियम के नहीं चल सकती इसलिये नियम तोड़ने वालों के लिये अनुशासन होना ज़रूरी है। (1 तीमु. 1:9-10)।

आज कलीसिया में अनुशासन की कमी क्यों है? अनुशासन को काम में लाना अगुवों का काम है। हमारे अगुवे यदि मज़बूत नहीं हैं तो अनुशासन लागु करना कठिन होगा। कई अगुवे इसलिये सदस्यों को समझने में असमर्थ होते है क्योंकि उनके अपने जीवन बाइबल अनुसार नहीं होते। कई ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि यह उनका व्यक्तिगत मामला है परन्तु कलीसिया को साफ सुथरा रखने के लिये ऐसे फैसले लेने पड़ते हैं। ऐसा भी देखा जाता है कि कई बार चर्च लीडर सोचते हैं कि यदि हमने किसी सदस्य के विरूद्ध कार्यवाही करी तो और बहुत सारे लोग क्रोधित होकर चले जायेंगे। परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया में अनुशासन हो। (1 कुरि. 14:40)।

अब बात यह देखनी चाहिये कि कलीसिया में अनुशासन रखना क्यों अनिवार्य है? ऐसा इसलिये आवश्यक है ताकि जो भाई या बहन गलती कर रहा है, उसे सीधे रास्ते पर लाना। एक आत्मा को नाश होने से बचाना। (याकूब 5:19-20)। गलती करने वाले भाई को यह पाठ सिखाना है कि वह सही मार्ग पर आये। कलीसिया को आदर देना चाहिये और कोई भी ऐसा कार्य न करें जिससे कलीसिया की बदनामी हो। हमें यह भी लोगों को बताना है कि मसीही की कलीसिया गलत कार्यों का कभी साथ नहीं देती। (याकूब 3:16-18)। हमें अपने बुरे जीवन से प्रभु के क्रूस पर कलंक नहीं लगाना चाहिये। यदि मसीही लोग अनुचित जीवन जीते हैं तो वे यीशु को फिर से क्रूस पर चढ़ाते हैं। (इब्रा. 6:6)।

यदि कोई भाई या बहन कलीसिया में अपनी बुराई से मन नहीं फिराते तब कलीसिया

के अगुवों को उन्हें चेतावनी दे देनी चाहिये क्योंकि बाइबल कहती है कि ऐसे को अपने बीच से निकाल दो। (1 कुरि. 5:13)। निकालने का अर्थ यह नहीं है कि हम उनसे घृणा करते हैं बल्कि सबको कलीसिया में यह मैसेज़ जाये कि बुराई से मन फिराना बहुत आवश्यक है। कोई भी लीडर या चर्च का अगुवा यीशु से बड़ा नहीं है, परन्तु सबको यह पता होना चाहिये कि सम्पूर्ण कलीसिया प्रभु के आधिन है। (2 कुरि. 2:9)। यदि कलीसिया प्रभु की आज्ञाओं को मानकर नहीं चलती तब यह वास्तव में मसीह की देह नहीं है। (इफि. 1:22-23; कुलु. 1:18)।

आज मसीह की कलीसिया को ऐसे अगुवों की आवश्यकता है जो शिक्षा में निपुण हों। समय असमय प्रचार करने से तथा खरी शिक्षा देने में निपुण हों। (2 तीमु. 4:2)। जब किसी सदस्य के विरूद्ध कोई फैसला लिया जाता है तब सारी कलीसिया को एक साथ मिलकर फैसला लेना चाहिये। इस बात को कलीसिया के सामने प्रार्थना में रखना चाहिये। तथा कभी भी इस कार्य को ऐसे नहीं देखना चाहिये कि किसी से बदला लिया जा रहा है। जहां भी कलीसिया में ऐल्डर लोग हैं वे जानते हैं कि किसी कार्य को कैसे करना चाहिये। (इब्रा. 13:17)। यदि कलीसिया में अभी ऐल्डर नहीं है तब कुछ बुद्धिमान लोगों को यह फैसला करना चाहिये कि जिस सदस्य ने भी गलत काम किया है उसके साथ क्या किया जाये।

बाइबल में हम पढ़ते हैं कि कलीसिया का कोई सदस्य यदि अनुचित चाल चल रहा है, तो हम उसके साथ संगति न रखें और यह इसलिये करना है ताकि उस भाई को नसीहियत मिले कि वह जो गलती कर रहा है उसी के कारण ऐसा किया गया है। (1 कुरि. 5:11)। पौलूस 2 थिस्स. 3:6में कहता है कि ''हे भाईयों, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहो जो अनुचित चाल चलता है, और जो शिक्षा उसने हम से पाई है उसके अनुसार नहीं करता। और इसी अध्याय के 14 पद में कहता है, ''हमारी यदि कोई इस पापी की बात को न मानें तो उस पर दृष्टि रखों, और उसकी संगति न करों, जिससे वह लज्जित हो।'' फिर भी वह कहता है उसे बैरी मत समझो पर भाई जानकर चिताओ (पद 15)। याद रखों, कलीसिया में अनुशासन की बहुत आवश्यकता है। (2 थिस्स. 3:6-11)।

निर्णय करने का समय अभी है

सनी डेविड

बाइबल के नए नियम में, लूका की पुस्तक के सोलहवें अध्याय में प्रभु यीशु मसीह ने अपने सुननेवालों को एक धनवान व्यक्ति और एक कंगाल व्यक्ति की कहानी सुनाई थी। इस कहानी से प्रभु यीशु ने यह सिखाया था, कि मनुष्य का पृथ्वी पर जीवन ही सब कुछ नहीं हैं, पर मनुष्य के वास्तविक जीवन का आरंभ इस जीवन के बाद ही होता है। क्योंकि मनुष्य का आत्मिक और अनन्त जीवन इस पृथ्वी पर के जीवन के बाद ही शुरू होता है। पर इस

जीवन में मनुष्य कहां होगा? और किस परिस्थिति में होगा? इस बात का निर्णय मनुष्य स्वयं अपने इस जीवन में ही करता है। प्रभु यीशु ने कहा था कि-

एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहनता था, और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। और लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ, उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ, कि वह कंगाल एक दिन मर गया और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया। और वह धनवान भी मरा, और गाड़ा गया। और अधोलोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा और उसने पुकार कर कहा, कि हे पिता इब्राहीम मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी अंगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा, कि हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं, परन्तु अब वह यहां शांति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच में एक गड़हा ठहराया गया है, कि जो यहां से तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सके, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। उसने कहा; तो हे पिता, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज, क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उन के सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। इब्राहीम ने उससे कहा, कि उन के पास तो मूसा और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। पर उसने कहा, नहीं, हे पिता इब्राहीम, पर यदि मरे हुओं में से कोई उनके पास जाए, तो वे मन फिराएगें। पर उसने उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यक्ताओं की ही नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तो वे उसकी भी नहीं मानेंगे।

यूं तो इस कहानी से अनेकों शिक्षाएं हमें सीखने को मिलती हैं, जैसे कि इस बात का चुनाव मनुष्य को स्वयं करना है कि वह आने वाले जीवन में किस स्थान पर जाना चाहता है। और अधोलोक में पीड़ाजनक स्थान ऐसा भयानक है, कि कोई भी नहीं चाहेगा कि उसके सगे-संबंधी वहां उसके पास आ जाएं। और यह कि परमेश्वर ने मनुष्य के लिए अपनी इच्छा को अपनी पुस्तक में लिखवाकर दे दिया है, और यदि हम उसकी लिखी हुई पुस्तक की बातों पर कोई ध्यान नहीं देते, तो परमेश्वर और किसी तरह से अपनी इच्छा को मनुष्य पर प्रकट नहीं करेगा। लेकिन, जो एक विशेष बात प्रभु यीशु ने इस कहानी से सिखाई थी, वह यह है, कि पृथ्वी के इस जीवन के समाप्त हो जाने पर मनुष्य की परिस्थिति तुरन्त क्षण भर में बदल जाती है। क्योंकि वह जो राजाओं की तरह बड़े सुख-विलास और धूम-धाम के साथ इस जमीन पर रहता था; जब वह अपना सब कुछ छोड़कर इस पृथ्वी पर से उठाया गया था, तो क्षण भर में ही उसने अपने आप को ऐसी जगह पर पाया था, जिस की वह कल्पना भी नहीं कर सकता था और वह किसी भी तरह से वहां पर अपना छुटकारा भी नहीं करवा सकता था। पृथ्वी पर उसके पास ताकत थी; अधिकार था; वह जो चाहता था हो जाता था। पर अब वह कुछ नहीं कर सकता

था। सिवाए इसके कि उसे बड़ा पछतावा आ रहा था, कि काश उसका ध्यान परमेश्वर और उसके वचन की बातों पर गया होता। पर अब वह कुछ नहीं कर सकता था। दूसरी ओर, वह कंगाल भी अपनी मृत्यु के पश्चात एक ऐसी जगह क्षण भर में पहुंच गया था जो उसकी कल्पनाओं से भी दूर थी। अब ऐसा नहीं है, कि प्रत्येक धनवान केवल इसलिये नरक में जाएगा, क्योंकि वह धनवान हैं और न ही यह सच है, कि हर एक कंगाल इसलिये स्वर्ग में जाएगा, क्योंकि वह एक कंगाल है। पर जिस बात को प्रभु ने इस कहानी में विशेष रूप से दर्शाया है, वह यह है, कि पृथ्वी पर एक यह जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिए अनिश्चित है। पर इस जीवन के बाद एक अनन्त जीवन हर एक इंसान के लिये निश्चित है। और वह अनन्त जीवन इस पृथ्वी पर के जीवन के बिल्कुल विपरीत हो सकता है। इसलिये कोई इंसान इस धोखे में न रहे कि यदि आज वह बड़े सुख विलास के साथ रह रहा है, और पृथ्वी पर उसके पास ताकत है, और अधिकार है और ऊंचा पद है, और मान-सम्मान है, तो इस जीवन की समाप्ति पर भी वह ऐसे ही सुख-विलास के साथ रहेगा। पर वास्तव में, सच्चाई एक है कि, पलक झपकते ही, इस जीवन के बाद एक धनवान एक कंगाल से भी बदतर हो सकता है, और एक कंगाल धनवान से भी अधिक सुखी हो सकता है। वास्तव में जो मनुष्य केवल अपने शारीरिक सुख की ही चिंता करता है पर अपनी आत्मा की सुरक्षा और सुख की तरफ कोई ध्यान नहीं देता है, उसकी तुलना प्रभु यीशु ने बाइबल में लूका की पुस्तक के बारह अध्याय में एक और कहानी में करके कहा था कि वह एक ऐसा व्यक्ति है, जैसा कि एक मूर्ख धनवान था। जो अपने खेतों की भारी उपज और अपने अपार धन को देखकर फूला नहीं समा रहा था। और अपने प्राण से कह रहा था, कि हे प्राण तेरे पास अब सब कुछ है, सो खा-पी और सुख के साथ रह, अब तुझे कोई चिंता नहीं। पर उसी रात को परमेश्वर ने उस धनवान से कहा, कि आज ही रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, सो अब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है वह सब किसका होगा? और प्रभु यीशु ने कहा था, कि ऐसे ही प्रत्येक वह जन भी है जो पृथ्वी पर अपने लिये सब कुछ बटोरकर अपने आप को धनी और सुखी समझता है, पर वास्तव में परमेश्वर की दृष्टि में वह धनी ओर सुखी नहीं है, पर एक कंगाल है। क्योंकि उसने केवल अपने शरीर के लिये ही सब कुछ बटोरा है, जो कि नाशमान है। पर अपनी अमर और अविनाश आत्मा के लिये उसने कुछ भी तैयारी नहीं की है; कुछ भी नहीं प्राप्त किया है।

और क्या यह वास्तव में सच नहीं है, कि लगभग सभी लोग अपनी आत्मा की सुरक्षा और भविष्य की ओर कोई ध्यान नहीं देते? सभी को केवल अपने शरीरों की ही चिंता है। किन्तु परमेश्वर को मनुष्य की आत्मा की चिंता है। क्योंकि वह जानता है कि मनुष्य का शरीर तो नाशमान है, पर उसकी आत्मा अविनाश और अमर है। इसलिये परमेश्वर मनुष्य की आत्मा को नरक के अनन्त विनाश से बचाना चाहता है। वह मनुष्य को स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनाना चाहता है। और स्वर्ग में प्रवेश करने से इंसान को केवल एक ही वस्तु रोकती है। और वह वस्तु है पाप। और परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करके, अपने पुत्र यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा, हर एक इंसान

को पाप से छुटकारा पाने का साधन दे दिया है। जिसमें विश्वास लाकर कोई भी व्यक्ति आज अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। बाइबल में लिखा है, कि जो व्यक्ति यीशु मसीह में अपने पूरे मन से विश्वास लाएगा, और सब बुराई से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से जल में बपतिस्मा लेगा तो वह अपने पापों से उद्धार पाएगा। यह प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है प्रत्येक मनुष्य से। और परमेश्वर न तो झूठ बोलता है और न पक्षपात करता है। पर जो परमेश्वर ने मनुष्य के उद्धार के लिये करना था, वह उसने कर दिया है। अब मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी आत्मा को स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनाने की ओर ध्यान दे। परमेश्वर की बात सुने, और उसकी बात पर विश्वास करके उसकी आज्ञा को माने।

क्योंकि मनुष्य का जीवन इस पृथ्वी पर अनिश्चित है। और यदि मनुष्य अपने इस जीवन में परमेश्वर की बात को मानकर अपने उद्धार को निश्चित नहीं करेगा, तो वह अपनी आत्मा को नरक में हमेशा के लिये खो देगा। और प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त करके अपनी आत्मा को अन्त में खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा?

कलीसिया की स्थापना

जे. सी. चोट

पिछले पाठ के अध्ययन में, यशायाह 2:2, 3, योएल 2, 28, 29, और दानिय्येल 2:44 से हमने देखा कि प्रभु के राज्य अर्थात् कलीसिया की स्थापना अन्त के दिनों में, यरूशलेम में, सामर्थ के आने पर होगी, व हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे, और उसका अन्त कभी न होगा। फिर मत्ती 16: 18; मरकुस 9:1 और लूका 24:46-49 में यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की थी कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा, व उसका आगमन सामर्थ सहित होगा, और मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार सब जातियों में, उसी के नाम से किया जाएगा। प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय को पढ़कर ज्ञात होता है कि यह सब भविष्यद्वाणियां और प्रतिज्ञाएं इसी अध्याय में पूर्ण हुईं।

जब हम प्रेरितों के काम 2 अध्याय को पढ़ते हैं, हम पाते हैं कि प्रेरित इस समय यरूशलेम में थे: "जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे। और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई, और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा

में बोल रहे हैं।" (प्रेरितों 2:1-6)। आगे हम पढ़ते हैं उन विभिन्न जाति के लोगों के विषय में जो वहां पर एकत्रित थे, "और वे सब चकित हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे कि यह क्या हुआ चाहता है? परन्तु औरों ने ठट्ठा करके कहा, कि वे तो नई मदिरा के नशे में है। पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालों, यह जान लो और कान लगा कर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी: कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे।" और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा।" (प्रेरितों 2: 17,21)।

यह बताने के बाद कि ये सब कुछ जो हो रहा था उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार था जो पूर्व की गई थीं, पतरस ने उपदेश देना आरंभ किया। उसने बताया कि यीशु एक मनुष्य था, जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों, और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने उनके बीच उनके द्वारा कर दिखलाए। फिर, उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि वह कैसे पकड़वाया गया और अधर्मियों के हाथों से क्रूस पर चढ़ाया व मारा गया। आगे पतरस ने बताया कि उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बंधनों से छुड़ाकर जिलाया। उस बड़े जन-समूह को निश्चय दिलाने के लिये पतरस ने दाऊद का उदाहरण देकर बताया कि मसीह पृथ्वी पर रहा, मर गया, गाड़ा गया और पुनजीर्वित हो उठा, और फिर स्वर्ग में चला गया ताकि सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने हाथ बैठे। इसके साथ ही उसने कहा, "इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह है। इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं। सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी। तब सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि भाइयो, हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ। सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।" और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उनमें मिला देता था।" (प्रेरितों 2:32-41, 47)।

पूर्वोक्त विवरण में प्रभु की कलीसिया की स्थापना के विषय में बताया गया है। यहां हम स्पष्टता से देखते हैं कि सब कुछ यरूशलेम में ही घटित हुआ। पवित्र आत्मा की अद्‌भुत शक्ति प्रेरितों पर उंडेली गई। यह पहले से की गई भविष्यद्वाणी के अनुसार था। पतरस ने विशेष रूप से इस पर बल देकर कहा कि, "यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वकता के द्वारा कही गई है।" (प्रेरितों 2:16), इसलिये इसमें कुछ भी संदेह नहीं। इसके अतिरिक्त, भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि यह सब अंत के दिनों में होगा, और यहां पतरस ने कहा कि यह वही हो रहा है जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता ने पूर्व कहा था, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि स्थापना अंत के दिनों में हुई। फिर, उस दिन हर एक जाति के लोग वहां पर उपस्थित थे, व मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार प्रभु यीशु के नाम से किया गया, और लगभग तीन हजार मनुष्यों ने प्रभु का वचन ग्रहण किया, और बपतिस्मा लिया, उन्हें उद्धार मिला, व प्रभु ने उन्हें कलीसिया में मिला दिया। इसलिये, यीशु मसीह ने कलीसिया की स्थापना लगभग 33 ई. स. में की, और तभी से यह आज तक वर्तमान है।

पतरस का विश्वास

ओ. पी. बेयर्ड

यीशु कौन है?

यीशु द्वारा अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरंभ किए जाने से पहले परमेश्वर ने उसके लिए मार्ग तैयार करने के लिए यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को भेजा। यूहन्ना का प्रचार था, ''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।'' और फिर बहुत से लोगों ने उससे बपतिस्मा लिया (मत्ती 3:6)। जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और यीशु भी बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल गया, और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर के समान उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी हुई, ''तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं'' (लूका 3:21, 22)।

यीशु के बपतिस्मा लेने से पहले यूहन्ना उसे एक धर्मी जन के रूप में तो जानता था, परन्तु उसे यह पता नहीं था कि वही खिस्तुस अर्थात मसीहा है। और यूहन्ना ने यह गवाही दी, मैंने आत्मा को कबूतर के समान आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया। मैं तो उसे पहिचानता नहीं था, परन्तु जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा, जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला है। और मैंने देखा, और गवाही दी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 1:32-34)।

पतरस उद्धारकर्त्ता से मिलता है

दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जन खड़े हुए थे, और उसने यीशु पर जो जा रहा था, दृष्टि करके कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है। तब वे दोनों चेले

उसकी यह सुनकर यीशु के पीछे हो लिये। उन दोनों में से, जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिये थे, एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। उसने पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उससे कहा, हम को ख्रीस्ट अर्थात मसीह, मिल गया। वह उसे यीशु के पास लाया। यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, यूहन्ना का पुत्र शमौन है, तू कैफा अर्थात पतरस कहलाएगा (यूहन्ना 1:35-37, 40-42)। पतरस और कैफा दोनों नामों का अर्थ पत्थर है, जो बड़ी चट्टान नहीं बल्कि उसमें से टूटा हुआ कंकर या पत्थर होता है।

विश्वास का पतरस का अंगीकार

यीशु की शिक्षा और उसके चमत्कारी चिन्हों से उसके चेलों को यह विश्वास हो गया कि वही मसीह है। परन्तु सुनने वाले सभी लोगों को विश्वास नहीं हुआ।

यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रवेश में आया, और अपने चेलों से पूछने लगा, लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं? उन्होंने कहा, कुछ तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं, और कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं। उसने उनसे कहा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? शमौन पतरस ने उत्तर दिया, तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यीशु ने उसको उत्तर दिया, हे शमौन योना के पुत्र तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है (मत्ती 16:13-17)। वहीं विश्वास आज लोगों को परमेश्वर की आशिषें दिलाता है, परन्तु पतरस के समय की तरह ही, संसार के लोगों के इस बारे में अलग-अलग विचार हैं कि यीशु कौन था।

बाद में यीशु कफरनाहूम में एक बड़ी भीड़ को सिखा रहा था। लोगों की बड़ी भीड़ लौट गई और वह इसलिए वापस चली गयी क्योंकि उसकी शिक्षा उन्हें समझ में नहीं आई उसके चेलों को भी उसकी शिक्षा समझ नहीं आई थी, परन्तु जब यीशु ने उनसे पूछा कि, क्या तुम भी चले जाना चाहते हो? शमौन पतरस ने उसको उत्तर दिया, हे प्रभु हम किसके पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। और हमने विश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है (यूहन्ना 6:67-69)। चेलों की समझ सीमित थी परन्तु मसीह में उनके विश्वास और उस पर भरोसा रखने और उसकी सिखाई हुई बातों ने उन्हें सब बातों पर भरोसा रखना और सच मानना सिखा दिया। मसीह में विश्वास आज भी यही काम करता है।

हमारे पास आज अनन्त जीवन की बातें हैं। जब यीशु अपने चेलों को छोड़कर चला गया तो उसने उन्हें अपना वचन देने के लिए पवित्र आत्मा को भेज दिया। उन्होंने उसका वचन हमें नये नियम में लिखकर दे दिया। हमें विश्वास उसी वचन को पढ़ने या सुनने से होता है (रोमियों 10:17)। क्रूस पर अपने चढ़ाए जाने से एक रात पहले यीशु ने अपने चेलों से कहा, मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकरे

तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा (यूहन्ना 16:12-15)।

क्या हमारा विश्वास कैसरिया फिलिप्पी और कफरनाहूम में जताए गए पतरस के विश्वास वाला है? यदि हां, तो हमारा विश्वास मसीह में है। और हम उस पर पूरा भरोसा रखते हैं और उसकी सब बातों को जो वह सिखाता है, मानने के लिए अपने दिलों को खोल देंगे। क्योंकि वह जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।

क्या यरूशलेम बहुत दूर है?

डब्ल्यू. डग्लस हैरिस

यरूशलेम को जाना तुम्हारी शक्ति से बाहर है (1 राजाओं 12:28; पृष्ठभूमि के लिए पूरा अध्याय पढ़ें)। इस अध्याय में राहोबाम के गद्दी पर बैठने के बाद इस्राएल राज्य के विभाजन की बात मिलती है। राहोबाम ने लोगों की शिकायतों को दूर करने के लिए बूढ़े लोगों की सलाह लेने के बजाय अपने हम-उम्र जवानों की सलाह मानी थी। परिणाम यह हुआ कि दस गोत्रों ने विद्रोह करके यारोबाम को अपना राजा बनाने के लिए मिस्र में निर्वासन से बुलवा लिया। यारोबाम ने मूर्तिपूजा पर आधारित सरकार बनाई। इस डर से कि लोग यदि आराधना के लिए यरूशलेम को लौट गए (जो कि परमेश्वर द्वारा अधिकृत स्थान था) तो वे उसे छोड़ सकते हैं, उसने दान और बेतेल में सोने के बछड़े बनवाए। फिर उसने यह प्रचार करते हुए कि उनके लिए मन्दिर में आराधना के लिए यरूशलेम में जाना बहुत कठिनाई से भरा होगा, उसके विवेक को शांत कर दिया। शारीरिक आकर्षण और सहजता से प्रेम, तब भी खतरनाक था और अब भी है।

यरूशलेम का प्राचीन आकर्षण

यरूशलेम का महत्व यहूदियों के लिए शुरू से रहा है, क्योंकि उनके मन में इसका विशेष आकर्षण और मोह था। यह उनका राजधानी नगर, शासन का केन्द्र, आराधना का स्थान था और इसे महाराजा का नगर कहा जाता था (मत्ती 5:35)। निर्वासन के दौरान दानिय्येल यरूशलेम की ओर मुंह करके प्रार्थना किया करता था और जब दासत्व में नहेम्याह को नगर की बिगड़ी हालत का पता चला तो वह रोने लगा था (दानिय्येल 6:10; नहेम्याह 2:3)। यहूदियों का यरूशलेम के प्रति प्रेम और लगाव भजन संहिता 137:5, 6 में बड़े मर्मस्पर्शी ढंग से दिखाया गया है।

एक प्रतीकात्मक अर्थ में यरूशलेम नये नियम की कलीसिया के बहाल करने वालों के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना प्राचीनकाल के इस्राएलियों के लिए था। प्रेरितों 2 अध्याय की घटनाएं कई बातों के आरंभ को चिन्हित करती हैं जैसे मानी जाने वाली आज्ञाओं के साथ-साथ स्थापित तथ्यों के रूप में सुसमाचार का सुनाया जाना, मसीह के लहू के द्वारा नई वाचा का दृढ़ किया जाना, उद्धार के लिए सुसमचार की योजना, पापों की क्षमा के लिए मसीह के नाम में बपतिस्मा, ग्रेट कमीशन से संबंधित मसीह की आज्ञाओं का आज्ञापालन मसीह की कलीसिया का जन्म, मसीह द्वारा अधिकृत आराधना

मसीह द्वारा प्रेरितों को बांधने और खोलने का अधिकार दिया जाना, और दाऊद की गद्दी पर मसीह का शासन।

आज परमेश्वर की वास्तविक ईच्छा को समझाने के लिए यरूशलेम शब्द का इस्तेमाल रूपक के रूप में किया जाता है। सुसमाचार सबसे पहले यरूशलेम में सुनाया गया था, इसलिए वही सुसमाचार आज जब बिना बदलाव किए सुनाया जाता है तो इसे वही पुराना यरूशलेम वाला सुसमाचार कहा जाता है।

बहुतों के लिए आज बहुत दूर

आज मसीह जगत में बहुत से लोगों को यरूशलेम जाना बहुत दूर लगता है यानी वे मनुष्य की बनाई सब धर्म शिक्षाओं तथा कैटेकिज्मों को छोड़कर उस कलीसिया को बहाल करने के लिए जिसका आरंभ यरूशलेम में हुआ था, नये नियम को अपना विशेष मार्गदर्शक बनाने के लिए पीछे जाने को तैयार नहीं है। धार्मिक तौर पर रिश्तेदारों की ओर अपनी पीठ फेरने, उन रीतिरिवाजों का जिन्हें वे पीढ़ियों से मानते आ रहे हैं, त्याग करने और यरूशलेम में वापस जाकर कलीसिया के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पैटर्न (नमूने) को मानने को तैयार नहीं हैं।

बहुतों को इफिसियों 4:4-6 वाली सात कदमों वाली योजना पर धार्मिक एकता को हासिल करने के लिए यरूशलेम बहुत दूर लगता है जिसमें बताया गया है कि एक ही प्रभु, एक ही विश्वास एक ही आत्मा, एक ही देह, एक ही आशा, एक ही बपतिस्मा और एक ही परमेश्वर है। यह यरूशलेम वाला सुसमाचार है। कोई और योजना या आधार काम नहीं करेगा। साम्प्रदायिकवादी (डिनोमिनेशनों की) फूट में यह एकता कभी हासिल नहीं होगी। कइयों को बपतिस्मे में वचन के अनुसार कार्य को बहाल करने के लिए यरूशलेम बहुत दूर लगता है। बपतिस्मे की जगह छिड़काव या उण्डेलने का बहाव आसान, सुविधाजनक और अनाधिकृत कार्य है। यरूशलेम का सुसमाचार यह बताता है कि बपतिस्मा पानी में दफनाए जाना है (कुलुस्सियों 2:12; रोमियों 6:3, 4)।

बहुतों के लिए मसीह और उसके प्रेरितों के द्वारा अधिकृत संगीत, संगीत की किस्म कण्ठ-संगीत को इस्तेमाल करने के लिए यरूशलेम बहुत दूर लगता है (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)।

धार्मिक जगत के अधिकतर लोगों के लिए बपतिस्मे के वचन के अनुसार पद, कलीसिया के वचन के अनुसार धर्मसार, वचन के अनुसार आराधना, जिसमें हर हफ्ते प्रभु-भोज लिए जाने की सलाह है, यरूशलेम जाना बहुत दूर लगता है।

सारांशः क्या आपने यरूशलेम वाले सुसमाचार की आज्ञा मानी है? प्रेरितों 2:22-47 से हमें पता चलता है कि मसीह के इल्हाम प्राप्त प्रेरितों से यरूशलेम में अपेक्षा की जाती थी। उनके सुनने वालों ने मसीह की मृत्यु, दफनाए जाने और जी उठने के प्रचार को सुना था। हृदय छिद जाने पर वे यह पुकारते हुए पूछने लगे थे कि उद्धार पाने के लिए वे क्या करें; और मसीह में पहले से विश्वासी होने के कारण उन्हें बताया गया था कि अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए मन फिराकर बपतिस्मा लो। यह आरंभ था।

क्या आपको यरूशलेम जाना बहुत दूर लगता है?

आपने सुना होगा

जॉन स्टेसी

कुछ लोगों का कहना है कि जिस प्रकार कलीसिया के आरंभ में लोग अन्य-अन्य भाषाएं बोलते थे, उसी प्रकार आज भी लोग बोलते हैं। किन्तु बाइबल इस विषय में क्या कहती है? सबसे पहले इस संबंध में, हम बाइबल के उन पदों पर ध्यान दें जिन में आत्मिक बरदानों की चर्चा की गई है और देखें कि वहां अन्य-अन्य भाषाएं बोलने के संबंध में क्या कहा गया है। 1 कुरिन्थियों 12:28-30 में हम देखते हैं, कि भाषाएं बोलने के बरदान को सबसे अन्त में दिया गया है। जबकि रोमियों 12:6-8 तथा इफिसियों 4:11-12 में इस बरदान की चर्चा तक भी नहीं की गई है। 1 कुरिन्थियों 14:6 के अनुसार पौलुस की दृष्टि में उपदेश देना अन्य भाषा बोलने से अधिक जरूरी थी। इसी अध्याय की 14-19 आयतों में लिखा है, कि हमारी आराधना में प्रत्येक बात समझ के साथ की जाए- अर्थात जिसे समझा जा सके। फिर 20-25 पदों में पौलुस उनसे कहता है कि उनमें से जो लोग अन्यान्य भाषा बोलने पर अधिक ज़ोर दें रहे थे वे आत्मिक रूप से छोटे बालकों के समान थे। 1 कुरिन्थियों 12:31 में लेखक कहता है कि जिन आत्मिक वरदानों की धुन में वे लोग थे उनसे भी अधिक उत्तम एक और वस्तु है और 13 अध्याय की पहली आयत में उस उत्तम वस्तु का वर्णन करके वह कहता है, कि वह सबसे उत्तम वस्तु है, प्रेम।

कुछ लोगों का कहना है कि जो व्यक्ति आज अन्य भाषा बोलता है उससे यह प्रमाणित होता है कि उस व्यक्ति को पवित्रात्मा का बपतिस्मा मिला है। परन्तु यदि यह सच है, तो फिर इसका अर्थ यह है कि हमारे आत्मिक होने का प्रमाण एक शारीरिक चिन्ह से मिलता है। किन्तु बाइबल स्पष्ट रूप से यह बताती है कि जिस व्यक्ति में आत्मिक परिवर्तन होता है उसमें आत्मिक बातें वर्तमान होती हैं। यदि हमने पवित्रात्मा पाया है, तो उसके फल भी हममें अवश्य ही वर्तमान होंगे जैसे कि हम गलतियों 5:22-23 में पढ़ते हैं।

एक अन्य बात इस संबंध में यह भी कही जा सकती है, कि जो लोग अन्य भाषा बोलने पर या आश्चर्यकर्मों पर अधिक बल देते हैं वे स्वयं पवित्रात्मा से भी अधिक उन वस्तुओं को महिमान्वित करते हैं। जबकि हमें मसीह को जो हमारे पापों के लिये क्रूस पर चढ़ाया गया था सबसे अधिक महिमान्वित करना चाहिए, उस पर और उसकी शिक्षाओं पर बल देना चाहिए।

क्या स्त्री ऐल्डर या डीकन बन सकती है?

बैटी बर्टन चोट

बदल रहे इस संसार में अधिक से अधिक स्त्रियां हर वह काम करना चाहती है जिसे करने की अनुमति पुरुषों को दी गई है। धार्मिक मामलों में भी कई स्त्रियां आमतौर पर

पर्दे के पीछे से अपने पतियों को बताती है कि कलीसिया में वे क्या करें और क्या नहीं। पिछले एक पाठ में हमने पढ़ा था कि परमेश्वर ने पुरुष को जिम्मेदारी दी थी कि वह स्त्री की अगुआई करे। यदि पुरुष इतने शक्तिशाली हों कि वे अपना कर्त्तव्य ठीक ढंग से निभाते हों, तो परमेश्वर को इससे प्रसन्नता होती है। कलीसिया के कई अगुवे इतने निर्बल हैं कि वे अपनी जिम्मेदारी को भूलकर स्त्री को अपने सिर पर चढ़ा लेते हैं परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि परमेश्वर इस उलटी भूमिका को स्वीकार कर लेगा। आज भी, परमेश्वर पुरुष को ही जिम्मेदार ठहराता है। कई बार कलीसिया में समस्याएं इसलिये पैदा होती है क्योंकि पत्नी अपने अनुसार कलीसिया को चलाना चाहती हैं।

आलोचक कई बार पौलुस के विषय में गलत बातें कहते हैं, क्योंकि उसी की कलम के द्वारा परमेश्वर ने आज्ञा दी थी कि स्त्रियां कलीसिया की सभा में उपदेश नहीं दे सकती और न ही उन्हें पुरुष पर आज्ञा चलाने की अनुमति है (1 तीमुथियुस 2:12; 1 कुरिन्थियों 14:34, 35)। इन वचनों के संबंध में कुछ लोग यह कहकर पौलुस का मज़ाक उड़ाते थे कि पौलुस ने स्वयं शादी नहीं की थी, इसलिए उसे स्त्रियां नापसंद थीं। परन्तु अन्य लेखकों की तरह पौलुस ने जो कुछ भी लिखा वह पवित्र आत्मा के आदेश से लिखा गया था। उसने कुछ भी अपनी समझ या पसंद के अनुसार नहीं लिखा। 2 तीमुथियुस 3:16-17 में हम पौलुस का लिखा पत्र पढ़ते हैं, हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है; ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, ओर हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।

यदि हम समझना चाहें तो अगुआई करने के संबंध में हमारे लिए परमेश्वर के नियम को समझना बहुत आसान है।

पुराने और नये नियम, दोनों को लिखने के लिए लगभग चालीस जनों का इस्तेमाल हुआ-परन्तु उनमें से एक भी स्त्री नहीं थी।

इस्राएल जाति के जन्म में याकूब के बारह पुत्र और एक पुत्री थी- परन्तु हम इस्राएल के बारह गोत्रों की बात करते हैं, जिनमें हर गोत्र याकूब के पुत्रों की संतान है। हम असंख्य पूर्वजों (परिवार के पुरखाओं), याजकों (याजिकाओं नहीं), न्यायियों (इस्राएल में एक महिला न्यायी-दबोरा ही थी जिसका उल्लेख न्यायियों 4:1-9 में है। इस महिला न्यायी का चयन इसलिए किया गया था क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इस्राएली लोग बुराई में पड़ गए थे और स्पष्टतया किसी भी पुरुष में इस्राएल की अगुआई करने के लिए पर्याप्त विश्वास और साहस नहीं था। जैसा कि हम आयात 9 में पढ़ते हैं कि इस्राएल के पुरुषों के लिए यह लज्जा की बात थी, राजाओं तथा अन्य पुरुषों के विषय में पढ़ते हैं जिन्हें नेतृत्व के लिए परमेश्वर की ओर से ठहराया जाता था।

बावजूद इसके लिए स्त्रियों के घरों में कलीसियाओं के इकट्ठा होने का उल्लेख है, नये नियम में प्रचारकों तथा अगुओं का नाम भी आता है।

हम बारह मूल प्रेरितों के बारे में जानते हैं, जो कि सभी पुरुष (नर) थे- बेशक यीशु की संगति में कुछ ऐसी स्त्रियां थीं जिनका विश्वास इन प्रेरितों से भी बढ़कर था (लूका

24:10, 11)। इससे पता चलता है कि पुरुष को परिवार में और कलीसिया में इसलिए नहीं ठहराया गया कि वह स्त्री की तुलना में अधिक समझदार या गुणी या अधिक विश्वासी है, बल्कि इसलिए ठहराया गया है कि उसे पहले सृजा गया और परमेश्वर की ओर से उसे अधिकार दिया गया। इसलिए उसे परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारी, अगुआई करने की नहीं बल्कि अपनी पूरी ताकत से अगुआई करने की है।

नये नियम में हमें पता चलता है कि मसीह की कलीसिया की स्थानीय मण्डलियां होती हैं और प्रत्येक मण्डली दूसरी मण्डली से स्वतंत्र है, और प्रत्येक स्थानीय मण्डली का संचालन योग्य ऐल्डरों और डीकनों के द्वारा किया जाता है (प्रेरितों 14:23, फिलिप्पियों 1:1; तीतुस 1:5)। इन पदों पर ठहराए जाने के लिए वे योग्यताएं होनी आवश्यक हैं जो हमें 1 तीमुथियुस 3:2-12 और तीतुस 1:5-9 में मिलती है।

सो चाहिए, कि अध्यक्ष (बिशपों, प्राचीनों, ऐल्डरों या पास्टरों यानी पासबानों) के लिए और शब्द। याद रखें कि मूल यूनानी भाषा में नये नियम में इन शब्दों का इस्तेमाल बहुवचन रूप में ही किया गया है। यानी ये शब्द एक ही पद के लिए हैं, परन्तु इसमें से कोई भी अकेला नहीं होता था। कम से कम वो ऐल्डर ही किसी मण्डली के पास्टर/पासबान हो सकते हैं।) निर्दोष और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, पहुनाई करने वाला, और सिखाने में निपुण हो।

पियक्कड़ या मारपीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो, और न झगड़ालू, और न लोभी हो। (जब कोई अपने घर ही का प्रबंध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्योंकर करेगा)।

फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए। और बाहर वालों में भी उसका सुनाम हो, ऐसा न हो कि निंदित होकर शैतान के फंदे में फंस जाए (1 तीमुथियुस 3:2-7)। और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर-नगर प्राचीनों को नियुक्त करे।

जो निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हो, जिन के लड़के वाले विश्वासी हो, और जिन्हें लुचपन और निरंकुशता का दोष न हो।

क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए, न हठी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करने वाला और न नीच कमाई का लोभी।

पर पहुनाई करने वाला भलाई का चाहने वाला, संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो। और विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे; कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके, और विवादियों का मुंह भी बंद कर सके (तीतुस 1:5-9)।

ऐल्डरों की नियुक्ति के लिए दिए गए निर्देशों से कई बातों का पता चलता है-

हर जगह की कलीसिया में अपने ऐडल्रों (जो कि नेतृत्व के लिए बहुसंख्या है) का होना आवश्यक है।

पुरुष के विवरण में यह बताया गया है कि वह एक ही पत्नी का पति हो... अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो और अपने बाल-बच्चों को सारी गंभीरता से अधीन रखता हो (जब कोई अपने घर ही का प्रबंध करना न जानता हो तो परमेश्वर की कलीसिया

की रखवाली कैसे करेगा) (1 तीमुथियुस 3:2, 4, 5)।

जो पुरुष ऐल्डर बनने का इच्छुक है, उसके दो विवाह नहीं हुए होने चाहिए या उसकी एक से अधिक पत्नियां नहीं होनी चाहिए, न ही उसका तलाक हुआ हो, यानी उसकी केवल एक ही पत्नी हो। उसके लिए यह भी आवश्यक है कि अपने परिवार को परमेश्वर की शिक्षा के अनुसार आकार दे और सिखाए ताकि यह साबित हो जाए कि वह अच्छी अगुआई करने वाला व्यक्ति है और बच्चों की, सांसारिक हो या आत्मिक, अगुआई अच्छी तरह से कर सकता है। कई वर्षों तक अपने परिवार की अगुआई करने के कारण उससे उम्मीद की जा सकती है कि जिस मण्डली की सेवा वह अन्य ऐल्डरों के साथ करता है उसे अच्छा नेतृत्व दे सकता है।

स्पष्ट है कि कोई स्त्री एक ही पत्नी या पति नहीं हो सकती। न ही वह अपने परिवार की अगुआ हो सकती है, जिस में अपने पति पर आज्ञा चलाकर उसे लगे कि परमेश्वर इससे प्रसन्न है। इसलिए वह ऐल्डर बनने के अयोग्य है, क्योंकि ऐसा करके वह कलीसिया के साथ-साथ अपने पति पर भी आज्ञा चलाने वाली बन जाएगी।

वैसे ही सेवकों (यानी डीकनों) को भी गंभीर होना चाहिए, दो रंगी, पियक्कड़ और नीच कमाई के लोभी न हों। पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें। और ये भी पहिले परखे जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें, तो सेवक (यानी डीकन) का काम करें।

इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गंभीर होना चाहिए, दोष लगाने वाली न हों, पर सचेत और सब बातों में विश्वासयोग्य हो।

सेवक (यानी डीकन) एक ही पत्नी के पति हों और लड़के वालों और अपने घरों का अच्छा प्रबंध करना जानते हो। क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिए अच्छा पद और उस विश्वास में, जो मसीह यीशु पर है, बड़ा हियाव प्राप्त करते है (1 तीमुथियुस 3:8-13)।

आधिकारिक पद के अनुसार डीकनों का काम ऐल्डरों के अधीन होकर सेवा करना है, जो कि डीकन शब्द का अर्थ भी है। कुछ डिनोमिनेशनों में ऐल्डर का ही कोई पद नहीं होता। डीकन ही ऐल्डर का काम करते हैं, जबकि कथित पास्टर को (जिसे नये नियम के समय में ऐल्डर कहा जाता था) सुसमाचार सुनाने वाले यानी इवैंजलिस्ट का काम सौंप दिया जाता है।

उपयुक्त पदों पर यह गड़बड़ी वचन के बाहर से है। हमें परमेश्वर के अधिकार को मानना आवश्यक है और हमें चाहिए कि उस पर ध्यान दें। जो कुछ वह हमें अपने वचन में बताता है उसने बता दिया है कि प्रत्येक कलीसिया में ऐल्डर होने चाहिए। फिर डीकनों का होना भी आवश्यक है। दोनों के लिए योग्यताएं उसने अपने वचन में बता दी हैं? इन दोनों पदों के लिए किसी को चुनने से पहले उसमें से योग्यताएं होनी आवश्यक है। जब तक इन योग्यताओं वाले लोग नहीं होते तब तक कलीसिया ऐल्डरों और डीकनों के बिना काम कर सकती है। जैसे ऐल्डरों की नियुक्ति से पहले क्रेते और अन्य स्थानों में करती थी।

ऐल्डरों की तरह ही डीकनों के लिए भी आवश्यक है कि वे एक ही पत्नी के पति हों (1 तीमुथियुस 3:12)। स्पष्टतया कोई स्त्री डीकन बनने की योग्यता नहीं रखती है।

आयत 11 को पढ़कर कोई कहेगा कि यह डीकनैस अर्थात सेविका के लिए हो सकता है। परन्तु पूरा संदर्भ पढ़ने पर हमें पता चलता है कि यह कलीसिया के अगुओं की पत्नियों के धर्मी होने के लिए कहा गया है। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि स्त्रियों को सेविका या डीकनेस बनाया जा सकता है। बेशक इस पद के बिना ही हर मसीही सेवक है और हमारे लिए सेवा का कार्य करना अनिवार्य है। प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया में स्त्री अन्य मसीही लोगों की सहायता करके और कलीसिया को बढ़ाकर बहुत सेवा कर सकती है। यह सेवा करने के लिए तो हम उनके साथ हैं।

परन्तु यदि कोई भी संस्था किसी स्त्री को प्रभु की कलीसिया की मण्डली पर अगुआई करने का अधिकार देकर उसे ऐल्डर या डीकन के पद पर ठहराती है तो यह सीधे-सीधे पवित्र शास्त्र के इन स्पष्ट वचनों का उल्लंघन होगा। यह परमेश्वर की आज्ञा में मनुष्य द्वारा जोड़ा जाना होगा, जिसकी सख्ती से मनाही की गई है (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19; व्यवस्थाविवरण 4:2; नीतिवचन 30:6)।

विचार: कोई पूछेगा, माना कि मनमर्जी से मण्डली पर आज्ञा जाताना स्त्री के लिए गलत होगा, परन्तु यदि ऐल्डरों द्वारा उसे लीडर के रूप में सेवा करने को कहा जाए तो क्या यह भी गलत होगा? ऐसी स्थिति में क्या वह उन्हीं की अधीनता में सेवा नहीं कर रही होगी? इस तर्क में समस्या यह है कि हम इस तथ्य को कभी नहीं भूल सकते कि कोई भी चाहे वह ऐल्डर ही क्यों न हो, किसी भी मामले में परमेश्वर के नियम को ताक पर रखकर अपने नये नियम नहीं बना सकता।

क्योंकि हम भाई हैं (रोमियों 14:10)

डेविड रोपर

हम परिवार हैं: अगली तीन आयतें (10 से 12) एक ही प्रबल विचार के साथ एक इकाई हैं यानी आयत 10 का पहला भाग उस विचार में ले जाता है, परन्तु पौलुस ने ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया, जो इतना महत्वपूर्ण है कि मैं चाहता हूं कि हम इसे अलग करने पर विचार करें और वह शब्द भाई, है। हमें अब से एक-दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि हम मसीह में भाई और बहनें है।

पौलुस ने पूछा, तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? (आयत 10क)। पहला प्रश्न निर्बल भाई के लिए हो सकता है (देखें आयतें 2, 3), परन्तु तू अपने भाई पर दोष क्यों लगाता है? दूसरा प्रश्न बलवान भाई से पूछा गया होगा (देखें आयत 3), या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? दोनों प्रश्न आयत 4 में पूछे गए प्रश्न की भावना की झलक देते है, तू कौन है? जो (अपने भाई पर) दोष लगाता है? परन्तु आयत 10 में पूछे गए प्रश्न में एक महत्वपूर्ण शब्द भाई

जोड़ा गया है। (जैसा कि पूरे पत्र में भाई का इस्तेमाल मसीह में भाइयों और बहनों को दर्शाने के लिए सामान्य अर्थ में किया गया है।) पौलुस ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि हम परिवार है।

हमें एक-दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए: क्योंकि हम परिवार है, इसलिए हमें एक-दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए। हम में से अधिकतर लोग परिवार के मामले में एक-दूसरे को सहने को तैयार होते हैं। पिछली बार परिवार के इक्ट्ठा होने के बारे में विचार करें, जिसमें आप शामिल हुए थे। शायद बालों में कंघी किए बिना और चिड़ाने वाली आदतों के साथ अंकल कपिल नहीं थे। शायद अंटी मेबल वहीं थी। यह अंटी मेबल वही है, जो हमेशा सोच समझकर बोलती है चाहे इससे लोग नाराज ही हो जाएं। शायद बिगडैल चचेरे भाई भी वहीं थे, जो इस उम्मीद से कि वे अपने जीवन बदल लेंगे, हर रात के लिए प्रार्थना करते हैं। बेशक एक-दूसरे के पीछे भागने वाले कुछ बदमाश भतीजों के बिना ऐसा इकट्ठा अधूरा है, जिन्होंने आपकी दादी को गिरा ही दिया था। अधिकतर परिवारों के इक्ट्ठा होने में कम से कम कोई न कोई अलग सदस्य अवश्य होता है। तो भी, जब खाने का समय आता है तो उन्हें भी शेष लोगों के साथ बैठकर खाने का आनन्द लेने के लिए बुलाया जाता है।

यदि हम अपने सांसारिक परिवारों में ऐसी भिन्नताओं को स्वीकार करने को तैयार है, तो हमें अपने आत्मिक परिवार में उन लोगों को स्वीकार करने में कितना अधिक तैयार होना चाहिए। चार्ल्स स्विंडल ने सुझाव दिया कि रोमियों 14 की समस्या भोजन की समस्या नहीं थी, यह तो प्रेम की समस्या थी। और सबसे श्रेष्ठ बात यह है कि एक-दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है। (1 पतरस 4:8)।

अखमीरी रोटी

प्रभु-भोज में जिन दो वस्तुओं को इस्तेमाल किया जाता है, उनमें से एक वस्तु है, अखमीरी रोटी। जिस समय यीशु ने इस यादगार की स्थापना की थी, उस वक्त यहूदी लोग अखमीरी रोटी का पर्व मना रहे थे। (मत्ती 26:17)। यीशु और उसके चेले भी उसी पर्व के अवसर पर एक जगह एकत्रित हुए थे। और यीशु ने उस समय अखमीरी रोटी का एक टुकड़ा अपने हाथ में लेकर उसके लिये धन्यवाद दिया था और फिर उसमें से तोड़कर अपने चेलों को देकर कहा था, कि मेरी देह को स्मरण करने के लिए इसमें से खाओ। (मत्ती 26:26-29)। यही कारण है कि हम प्रभु-भोज में अखमीरी रोटी का इस्तेमाल करते हैं।

अखमीरी रोटी को आसानी से बनाया जा सकता है। जिस प्रकार से रोटी या चपाती बनाई जाती है उसी तरह से इसे बनाया जाता है। परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आटे में खमीर न मिलाया जाए यही कारण है कि प्रभु-भोज में डबलरोटी को उपयोग में नहीं लाया जा सकता, क्योंकि उसमें खमीर होता है।

दाख-रस

प्रभु-भोज में दूसरी आवश्यकता है, दाखरस, अर्थात् अंगूर का रस। जिस रात को यीशु

अपने क्रूसारोहण से पूर्व, पकड़वाया गया था उससे न केवल उसने अपने चेलों को अखमीरी रोटी ही खाने को दी थी, परन्तु यीशु ने उस समय एक प्याला भी अपने हाथ में उठाया था - उसमें दाखरस था। यीशु ने उसे लेकर उसके लिये धन्यवाद दिया था और फिर अपने चेलों से कहा था, कि तुम सब इसमें से पीओ, जो लोहू मैं तुम्हारे पापों की क्षमा के लिये क्रूस पर बहाने जा रहा हूं उसे स्मरण करने के लिये तुम ऐसा ही किया करना।

अंगूर एक ऐसा फल है जो संसार के सभी भागों में प्रायः उपलब्ध है। इसलिये यीशु ने अपने लोहू की यादगार के लिये एक ऐसे फल के रस को ठहराया है जो दुनिया में सभी जगह मिलता है। जब मसीही लोग प्रत्येक रविवार (इतवार) के दिन एकत्रित होकर प्रभु-भोज में भाग लेते है, तो ऐसा करके वे यीशु के प्रति उसकी मृत्यु के लिये अपने धन्यवाद को प्रकट करते हैं। यदि कोई मसीही व्यक्ति सप्ताह के पहिले दिन अन्य मसीही लोगों के साथ एकत्रित नहीं होता है, जबकि वह ऐसा कर सकता है, तो प्रत्यक्ष ही है कि वह मनुष्य मसीह के बलिदान के लिये धन्यवादी नहीं है।

यद्यपि अंगूर का रस बाजार से खरीदा जा सकता है, परन्तु यदि उपलब्ध न हो तो अंगूर लेकर उनका रस निकाल लें। एक अच्छा तरीका यह भी है, कि अंगूर के मौसम में रस निकालकर रख लिया जाए और पूरे वर्ष उसे उपयोग में लाया जा सकता है, यदि उसे खराब होने से बचाया जा सके।

अकसर कुछ लोग किशमिश (सूखे अंगूर) लेकर पानी में उबाल लेते हैं और फिर उसमें से रस निकालकर उसे इस्तेमाल करते हैं। यह भी एक सरल और अच्छी विधि है। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रभु-भोज में, पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार मसीह की देह और उसके लोहू को स्मरण करने के लिए अखमीरी रोटी और दाख-रस को ही उपयोग में लाना चाहिए।

अपने ही घर में आप स्वयं मसीह की कलीसिया का आरंभ कर सकते हैं

अब, जब कि नए नियम कलीसिया के संबंध में आप ने आवश्यक जानकारी प्राप्त कर ली है, तो अब आप स्वयं अपने ही घर में मसीह की कलीसिया का आरंभ कर सकते हैं। यदि आप के आस-पास कहीं पर भी मसीह की मण्डली नहीं है। तो या तो आप स्वयं अपने ही घर में या फिर अपने इलाके में किसी और स्थान पर नए नियम की शिक्षानुसार एक मण्डली का आरंभ कर सकते है। किन्तु यदि सच्ची कलीसिया वहां पहिले ही से विद्यमान है, तो फिर वहीं पर एक और मण्डली का आरंभ करना कदाचित उचित न हो।

इस बात का ध्यान रखना बड़ा ही आवश्यक है, कि आप उन धार्मिक संगठनों (साम्प्रदायिक कलीसियाओं) से सावधान रहें जो यद्यपि मसीह के अनुयायी होने का दावा तो करते है, लेकिन न तो उसके वचन को मानते हैं, और न ही उसकी शिक्षाओं पर चलते हैं। यह बात उनकी उपासना से और जिस नाम से वे कहलाते हैं बड़ी ही स्पष्टता से देखी जा सकती है। (2 यूहन्ना 9-11)।

अब, यदि आपने मसीह की शिक्षा को मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लिया है, और यदि आपने अन्य लोगों को मसीह का सुसमाचार सिखाकर उन्हें बपतिस्मा दे दिया है, तो आप को चाहिए कि आप प्रत्येक रविवार को उपासना के लिए एक ऐसा

समय निश्चित करें जो सबके लिये उपयुक्त हो। उपासना करने के लिये कलीसिया आप के घर में एकत्रित हो सकती है, या फिर किसी अन्य स्थान पर मिला जा सकता है। आराधना में गीत गाकर प्रभु की प्रंशसा करनी चाहिए और मसीह के नाम के द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। फिर पवित्र बाइबल में से कुछ पढ़कर उसके अर्थ को स्पस्ट शब्दों में उपस्थित लोगों को समझाना चाहिए। और फिर, प्रभु भोज में, जिसे पहिले से भली प्रकार तैयार करके रख दिया जाता है, भाग लेना चाहिए। सबसे पहिले प्रभु भोज लेते समय, रोटी के लिये धन्यवाद दिया जाए और फिर उसे उन सब को दिया जाए जिन्होंने बपतिस्मा ले लिया है, ताकि वे सब उसमें से थोड़ा-थोड़ा सा टुकड़ा तोड़कर खाएं और मसीह की देह को स्मरण करें। फिर ऐसे ही दाखरस के लिए भी धन्यवाद दिया जाए और जिस प्याले या गिलास में वह है उसमें से पीने के लिये कलीसिया के सभी सदस्यों को दिया जाए मसीह के लोहू को स्मरण करने के लिये। उपासना सभा में प्रार्थना की जानी चाहिए। फिर, चंदा इकट्ठा किया जाना चाहिए, प्रत्येक अपनी आमदनी के अनुसार हर्ष के साथ दे। प्रत्येक रविवार के चंदे को एक कॉपी में लिख देना चाहिए ताकि कलीसिया की बढ़ौत तथा उन्नति के लिये उसका इस्तेमाल किया जाए।

आपको इस बात के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। कि आप आस-पास और सब जगह लोगों को मसीह का सुसमाचार सुनाएं। आरंभ के मसीही लोगों के बारे में बाइबल बताती है कि वे घूम-घूमकर वचन का प्रचार करने लगे। (प्रेरितों 8:4)।

कलीसिया किस प्रकार से संगठित है?

प्रभु की कलीसिया की प्रत्येक मंडली स्वतंत्र हैं तथा एक मण्डली के ऊपर किसी भी दूसरी मण्डली का अधिकार नहीं है। प्रत्येक मण्डली स्वाधीन हैं। कलीसियाएं एक साथ संगठित नहीं है, और न ही कलीसिया के स्थानीय संगठन से बढ़कर और कोई संगठन है। यह बाइबल की शिक्षा है।

बाइबल में कलीसिया को मसीह की देह कहकर संबोधित किया गया है। इन शब्दों से यह व्यक्त होता है कि मसीह देह (कलीसिया) का सिर है। (कुलुस्सियों 1:18; इफिसियों 1:22)। और व्यक्तिगत रूप से मसीही लोगों को उसकी देह के अंग कहा गया है। (1 कुरिन्थियों 12:20)। जिस प्रकार से हमारी शारीरिक देह में प्रत्येक अंग का अपना एक विशेष कार्य होता है, ऐसे ही मसीह की देह में भी है। कलीसिया का कोई भी सदस्य किसी दूसरे सदस्य से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। कलीसिया में सभी लोग महत्वपूर्ण हैं, और सभी अंगों का देह में अपना -अपना स्थान है, जिसके द्वारा सम्पूर्ण देह, अर्थात कलीसिया, संगठित होती है। मसीह की कलीसिया में सभी लोग आपस में भाई और बहन है।

लेकिन इस बात को हमें याद रखना चाहिए कि कलीसिया का सिर मसीह है, और इस कारण सारा का सारा अधिकार केवल उसी के पास है। कलीसिया के नमूने को कोई भी इंसान नहीं बदल सकता, क्योंकि किसी भी मनुष्य को ऐसा करने का अधिकार नहीं दिया गया है। अधिकार सारा केवल यीशु मसीह के ही पास है।

किन्तु आने वाले वर्षों में मसीह की कलीसिया की एक मण्डली जब किसी स्थान पर गिनती में और आत्मिक रूप से मजबूत हो जाती है, तो उस मण्डली में से कुछ योग

आदमियों को चुनकर उन्हें मण्डली में अध्यक्ष अर्थात बुजुर्ग नियुक्त किया जाना चाहिए। उन आदमियों का चुनाव स्वयं मण्डली के सदस्यों को ही करना चाहिए। बाइबल में अध्यक्षों को रखवाले या चरवाहे कहकर भी संबोधित किया गया है। (1 पतरस 5:1-5)। उनका काम मण्डली के सदस्यों की आत्मिक चौकसी या रखवाली करने का होता है।

अध्यक्षों या रखवालों को ही अंग्रेजी की बाइबल में बिशप और पास्टर कहकर भी संबोधित किया गया है। और बाइबल के अनुसार प्रत्येक मण्डली में बहु-संख्या में, अर्थात एक से अधिक अध्यक्षों (प्राचीनों) को नियुक्त किया जाना चाहिए। किसी भी मण्डली में एक अध्यक्ष (बिशप या पास्टर) नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए। (फिलिप्पियों 1:1; प्रेरितों 14:23)। बाइबल में प्रचारकों को पास्टर कहकर संबोधित नहीं किया गया है। जिस तरह के लोगों को मण्डली में से चुनकर मण्डली में अध्यक्ष या प्राचीन (बिशप या पास्टर) नियुक्त किया जाना चाहिए उनकी योग्यताओं के बारे में हमें 1 तीमुथियुस 3:1-7 और तीतुस 1:5-9 में मिलता है।

इसी प्रकार अध्यक्षों के काम में हाथ बटाने के लिए मण्डली में से चुनकर कुछ आदमियों को मण्डली में सेवक नियुक्त किया जाना चाहिए। (फिलिप्पियों 1:1; प्रेरितों 20:28)। सेवकों में कौन-कौन सी योग्यताएं होनी चाहिए इस संबंध में हमें 1 तीमुथियुस 3:8-13 में मिलता है।

किसी भी जगह पर मसीह की मण्डली (कलीसिया) का आरंभ कुछ विश्वासियों के साथ होता है। वे जो मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास लाते हैं और पाप से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये यीशु की आज्ञानुसार पानी में बपतिस्मा लेते हैं, उन्हें मसीह अपनी कलीसिया में मिला लेता है। धीरे-धीरे वह स्थानीय कलीसिया गिनती में और आत्मिक रूप में बढ़ने लगती है। कुछ वर्षों के बाद जब उस कलीसिया में कुछ ऐसे आदमी पाए जाते हैं जो उम्र में बड़े होते हैं और गंभीर और समझदार होते हैं; और प्रभु के वचन को सिखाने में निपुण और अच्छे चाल-चलन के होते हैं। अर्थात ऐसे मसीही जो बाइबल की शिक्षानुसार कलीसिया में अध्यक्ष या रखवाले नियुक्त किये जा सकते हैं, तो कलीसिया के सदस्यों की आत्मिक देखरेख के लिये उन्हें कलीसिया में नियुक्त किया जाना चाहिए।

जरा सोचिये! पतरस कैथलिक था! पौलुस प्रोटेस्टैन्ट था, मसीह ने कहा था, कि मैं पेनटेकोस्टल चर्च (कलीसिया) बनाऊंगा, मत्ती मेथोडिस्ट चर्च का मेमब्र था, और यूहन्ना बैपटिस्ट चर्च में था, पहली शताब्दी में मसीह के अनुयायी लूथरन, ब्रेद्रन और सालवेशन आर्मी जैसी सैकड़ों साम्प्रदायिक कलीसियाओं में बंटे हुए थे। लोग सीलास को पास्टर सीलास, तीमुथियुस को पादरी तीमुथियुस, तीतुस को रेवरेन्ड तीतुस, फिलिप को फादर फिलिप, और हनन्याह को बिशप साहब कहते थे, और हां, पतरस तो पोप था ही।

क्या आप बता सकते है?

बाइबल की कौन-सी पुस्तक में, किस अध्याय में और किस पद में इनके बारे में मिलता है- ''बड़ा दिन, खजूरों का इतवार (पाम सन्डे), गुड फ्राइडे, ईस्टर, बच्चों को बपतिस्मा देना, दृढ़िकरण। जो कोई आगे बढ़ जाता है और मसीह की शिक्षा में बना नहीं

रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं, जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी।'' (2 यूहन्ना 9)। मसीह की सारी शिक्षा बाइबल के नए नियम में हैं।

छुड़ाए हुए (रोमियों 1:7)

जे. लाकहर्ट

हम को उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा मिला है : मसीही लोगों को परमेश्वर द्वारा पवित्र और निर्दोष होने के लिए चुने जाने वाले कहने के बाद पौलुस बताने लगा कि यह ऐसी स्थिति कैसे संभव है। परमेश्वर के लेपालक पुत्रों को मसीह की बलिदानपूर्वक मृत्यु के द्वारा छुड़ाया गया है और इस कारण अनुग्रहपूर्वक पाप क्षमा किया गया है। 1:3-14 में बताई गई अगली दो आत्मिक आशिषें इस प्रकार हैं।

आयत 7: पौलुस ने भाइयों को मसीह में मिलने वाली तीसरी आत्मिक आशीष का स्मरण दिलाया, हम को उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा मिला है। छुटकारा शब्द की एक समृद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है और परमेश्वर के साथ हमारे संबंध के विवरण के लिए सबसे सार्थक शब्दों में से एक है। अनिश्चित भूतकाल (कालांतर में किसी समय हुए कार्य की बात करते हुए) पौलुस ने वर्तमान काल (वक्ता के बात कहने के समय हो रही घटना) का इस्तेमाल किया। जिस आशीष की उसने बात की वह कालांतर में हो चुकी थी, परन्तु उसके वर्तमान और भविष्य में लाभ मिलने थे। जो लोग मसीह में हैं, उन्हें अब इस वर्तमान समय में छुटकारे के लाभ मिले हैं। सब प्रकार की आत्मिक आशिषें मसीह में हैं, जिस कारण उसमें ही हम को छुटकारा मिला है।

छुटकारा पुराने नियम की अवधारणा है। पवित्र शास्त्र इस्राएल के मिस्र की दासता को छुटने को छुटकारा बताता है (उदाहरण के लिए देखें निर्गमन 6:6; 15:13; व्यवस्थाविवरण 7:8; 15:15)। नये नियम के इस सिद्धान्त को लेते हुए पौलुस के मन में पक्का पुराने नियम की पृष्ठभूमि ही होगी। छुटकारा शब्द से लिया गया है, इसका अर्थ है दासत्व, की स्थिति से छूटना। आरंभ में इस में किसी गुलाम या बंदी को वापस खरीदना अर्थात छुड़ौती का दाम चुकाकर स्वतंत्र करने का विचार पाया जाता था। यूनानी धर्मशास्त्र में छुटकारा में एक उपपद का इस्तेमाल किया गया है, जिसका मूल अर्थ वह छुटकारा है जिस की उम्मीद और चाह की जाती थी और मिल गया है। इस आयत को लिखते हुए पौलुस के मन में, छुटकारा की बात करते हुए उसके लहू के द्वारा को जोड़ते समय छुड़ाने और छुड़ौती दोनों शब्द होंगे।

मसीह का लहू पापी को छुड़ाने के लिए चुकाई गई कीमत है। इसलिए पौलुस ने कहा, क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, (1 कुरिन्थियों 6:20)। पतरस ने इसमें जोड़ा, तुम्हारा छुटकारा मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ (1 पतरस 1:18, 19)। छुटकारे के लिए मसीह के लहू की कीमत क्यों देनी पड़ी, लैव्यव्यवस्था 17:11 में एक गहरी बात मिलती है, जहां पुराने नियम के बलिदानों की व्याख्या की गई है। वहां पर मूसा

ने कहा, क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है.... क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित होता है। जिस प्रकार से बलिदान में चढ़ाए गए प्राण और लहू से परमेश्वर का क्रोध प्राचीन इस्राएल के पापों के प्रति थोड़ी देर के लिए शांत होता था, वैसे ही पापियों के लिए मसीह के दिए गए प्राण से पाप के लिए ठहराए गए प्राणों पर उसका क्रोध और न्याय पक्के तौर पर शांत हो गया। उसके लोहू के द्वारा में उपसर्ग है, जो दिखाता है कि मसीह का लहू वह माध्यम है जिस के द्वारा पाप की कीमत चुकाई गई। परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था के अनुसार पाप की मजदूरी मृत्यु है (रोमियों 6:23); परन्तु मसीह ने अपने लहू के द्वारा हमारे छुटकारे का दाम चुका दिया।

सुधारना

टॉम केल्टन

पवित्र शास्त्र सुधारने के लिए लाभदायक है (2 तीमुथियुस 3:16)। यह दुर्व्यवहार तथा गलत शिक्षा का सामना करके उसे फटकार लगाता है। फ्रांसीसी लोगों के अनुसार सुधारने का अर्थ सच्चाई की विजयी भुजा के ऐसे सफल उपयोग के साथ, दूसरे को डांटना, जिसे वह चाहे अपने पाप को माने तो न, पर कम से कम उसे दोषी होने का अहसास हो जाए।

बाइबल में सुधार के दो पहलू स्पष्ट हैं। पाप पूर्ण आचरण का सुझाव और भ्रमित शिक्षा का सुझाव। पौलुस ने तीमुथियुस को जो इफिसुस कलीसिया में साफ सफाई करने को कार्य कर रहा था, निर्देश दिया कि तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट और समझा (2 तीमुथियुस 4:2)। प्रचार करते हुए तीमुथियुस को पवित्र शास्त्र का प्रयोग करना आवश्यक था ताकि लोग पाप से मुड़ जाएं। चाहे ऐसा समय आना था जिसमें अधिकर लोगों ने ऐसे प्रचार को सहन नहीं करना था (आयत 3)।

इब्रानियों 4:12, 13 भी आप को सुधारने की बात करता है। आयत 12 परमेश्वर के वचन को दोधारी तलवार के रूप में दिखाता है जो व्यक्ति के अंदर तक गहरा वार करके उसके मन की भावनाओं और विचारों को जांच लेता है। आयत 13 कहती है, सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन जिससे हमें काम है उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और प्रगट है। परमेश्वर अपने वचन के साथ हमारे दिलों के अंदर घुस जाता है और हमें अपनी नजर के सामने बिल्कुल खोलकर रख देता है।

जब वचन सच्चाई से और सही सही सुनाया जाता है तो मसीही लोग अपने पापों से निरुत्तर होकर या तो मन फिरा लेते हैं या उन्हें छोड़ देते हैं। बहुत कम लोग होंगे जो यदि परमेश्वर की बात को मानने को तैयार न हों तो उसके वचन की डांट को न मानें। यीशु ने कहा कि बुराई करने वाले लोग ज्योति से घृणा करते हैं और वे ज्योति में नहीं आते ताकि कहीं उनके काम पता न चल जाएं (यूहन्ना 3:20)।

वे मसीही लोग जिन्हें उपदेश समझाने और सुधारने की शिक्षा प्रचारकों ने दी है, बाइबल की सच्चाइयों को अच्छी तरह समझ जाएंगे और नासमझ बच्चों जैसे नहीं बनेंगे बल्कि उन हृष्ट-पुष्ट जवानों की तरह होंगे जो आसानी से झूठी शिक्षा को पहचान लेते है। मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से ही उनके भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाने से बचेंगे (इफिसियों 4:14)।

क्या यह काफ़ी है?

सूज़ी फ्रैड्रिक

जब एक स्त्री यह समझ लेती है कि वह एक धार्मिक जीवन व्यतित कर रही है, तब यह स्वाभाविक है कि वह बाइबल की ओर देखती है कि परमेश्वर उससे क्या चाहता है? उसे बहुत सारी ऐसी स्त्रियों के उदाहरण मिलते हैं जो धार्मिक थीं जैसे कि सारा, जिसका परमेश्वर में बहुत बड़ा विश्वास था, तथा मारथा और मरियम जो कि मेहमान नवाज़ी यानि आदर सत्कार करने में पीछे नहीं रहती थीं तथा यीशु और उसके चेलों की उन्होंने बहुत सेवा की थी। दोरकास ने पूरे जीवन भर लोगों की सहायता की तथा प्रिसकिल्ला सुसमाचार फैलाने में पौलूस की सहायता करती थी। बाइबल हमें यह भी सलाह देती है कि हमें अपने पतियों से प्रेम करना चाहिए तथा अपने बच्चों से प्रेम करना और उनकी अच्छी देखभाल करनी चाहिए। दूसरों को यीशु के विषय में बताना तथा सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए तथा इस सब में धीरज़ रखने की बहुत आवश्यकता है। संयम तथा उचित व्यवहार की भी बहुत आवश्यकता है। जो भी स्त्री ऐसा करेगी उसके परिवार में प्रसन्नता होगी। परन्तु क्या यह सब करने से वह अनन्त जीवन, जो कि स्वर्ग में मिलेगा, उसको भी प्राप्त करेगी?

बाइबल का नया नियम हमें बताता है कि कोई भी व्यक्ति अनन्त जीवन को कमा नहीं सकता। यदि कोई व्यक्ति एक हज़ार अच्छे या भले कार्य कर ले या तीर्थ यात्राएं कर लें तौ भी वह अपने पापों से मुक्ति नहीं पा सकता। (इसके लिये देखिये-तीतुस 3:5; इफिसियो 2:4-10)। परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह यीशु के द्वारा हमें पापों से मुक्ति दे सकता है, ''क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियो 6:23)। जब हम विश्वास करके बपतिस्मे के द्वारा यीशु को अपने आप को सौंप देते हैं, तब हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं'' तथा हम परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं। (प्रेरितों 2:38; गलतियों 3:26-27)। हमारे बपतिस्मे के पश्चात जब हम निरन्तर परमेश्वर की आराधना करते तथा उस पर भरोसा रखकर उसकी सेवा करते हैं, तब उसका अनुग्रह हमारे पापों को लगातार क्षमा करता रहता है। (1यूहन्ना 1:7)।

मसीही बन जाने के पश्चात हमें उन बातों को करते रहना चाहिए जो धार्मिकता से जुड़ी हुईं हैं ताकि हम परमेश्वर को प्रसन्न कर सकें। यदि हम पापों से उद्धार पाना चाहते हैं तथा अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं तब हमें यीशु में बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, ताकि हमारे पाप क्षमा हो सकें। (यूहन्ना 3:3-5; मरकुस 16:15-16, 2 थिस्सलुनीकीयों 1:8;

प्रेरितों 2:38)। मेरा आपसे यह आग्रह है कि आप अपनी बाइबल को पढ़िये तथा खोजिये कि परमेश्वर की इच्छा आपके लिये क्या है? आज मनुष्य के लिये केवल एक ही आशा है और वो है प्रभु यीशु मसीह तथा उसका सुसमाचार (रोमियों 1:16)।

पति और पत्नी

क्लेरेंस डीलोच जूनि.

दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं (1 पतरस 3:7)। नये नियम में पति-पत्नी के संबंध पर सबसे बढ़िया वचनों में से एक हमें 1 पतरस 3:1-7 में मिलता है। पतरस वैवाहिक आनन्द की तीन आवश्यक बातों पर जोर देता है।

- अधीनता
- लिहाज
- सहयोग

पतियों को जिम्मेदारी की चार बातें याद दिलाई गई हैं–

1. शारीरिक सांझ, **जीवन निर्वाह करो**
2. बौद्धिक सांझ, **बुद्धिमानी से**
3. भावानात्मक सांझ, **उसका आदर करो**
4. आत्मिक सांझ, **जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं**

सफल और सुखी वैवाहिक जीवन की कुंजी दो लोगों के मनों, हृदयों, शरीरों और जीवनों की एक दूसरे के प्रति वचनबद्धता है। मसीही परिवार में पति और पत्नियां दोनों जीवन **के वरदान के वा**रिस है। जब दोनों मसीह के सामने और एक दूसरे के सामने समर्पण कर देते हैं तो विवाह सुखी जीवन बन जाता है।

जो कुछ पतरस ने कहा उसको ध्यान में रखकर इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए अपने वैवाहिक जीवन में जोड़ लें–

1. क्या मैं स्वर्ग में पहुंचने के अपने जीवनसाथी के प्रयासों में सहायता कर रहा/रही हूं या रूकावट बन रहा/रही हूं?

2. क्या मैं अपने साथी की आत्मिक उन्नति के लिए खुशनुमा माहौल में योगदान दे रहा/रही हूं?

3. क्या हम एक दूसरे के व्यक्तित्व, मनोभावों आदि को समझने में बढ़ रहे हैं?

4. क्या मैं अपने साथी के अहसास और भावनाओं के प्रति और संवेदनशील होना सीख रहा/रही हूं या मैं उसकी परवाह नहीं करता/करती हूं?

5. क्या यह विवाह सुखद या जी का जंजाल है, और इस दोनों में से मेरे कारण कौन सा है?

इस चैक लिस्ट के प्रकाश में आपका विवाह कैसा चल रहा है?